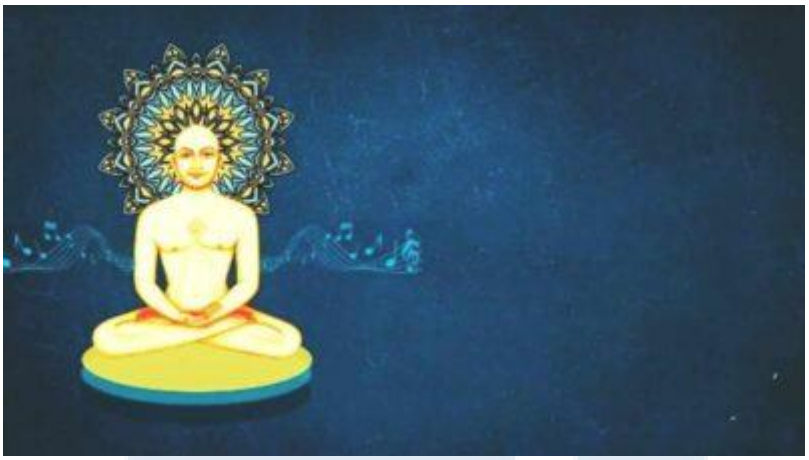

Naminatha Chalisa

सतत पूज्यनीय भगवान,
नमिनाथ जिन महिभावान॥

भक्त करें जो मन में ध्याय,
पा जाते मुक्ति-वरदान॥

जय श्री नमिनाथ जिन स्वामी।
वसु गुण मण्डित प्रभु प्रणमामि॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मिथिला नगरी प्रान्त बिहार।
श्री विजय राज्य करें हितकार॥

विप्रा देवी महारानी थीं।
रूप गुणों की वे खानि थीं॥

कृष्णाश्विन द्वितीया सुखदाता।
षोडश स्वप्न देखती माता॥

अपराजित विमान को तजकर।
जननी उदर बसे प्रभु आकर॥

कृष्ण असाढ़- दशमी सुखकार।
भूतल पर हुआ प्रभु-अवतार॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

आयु सहस दस वर्ष प्रभु की।
धनु पन्द्रह अवगाहना उनकी॥

तरुण हुए जब राजकुमार।
हुआ विवाह तब आनन्दकार॥

एक दिन भ्रमण करें उपवन में।
वर्षा ऋतु में हर्षित मन में॥

नमस्कार करके दो देव।
कारण कहने लगे स्वयमेव॥

ज्ञात हुआ है क्षेत्र विदेह में।
"भावी तीर्थंकर तुम जग में॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

देवों से सुन कर ये बात।
राजमहल लौटे नमिनाथ॥

सोच हुआ भव- भव में भ्रमण का।
चिन्तन करते रहे मोचन का॥

परम दिगम्बर व्रत करूँ अर्जन।
रतनत्रयधन करूँ उपार्जन॥

सप्रभ सुत को राज सौंपकर।
गए चित्रवन में श्रीजिनवर॥

दशमी असाढ़ मास की कारी।
सहस नृपति संग दीक्षाधारी॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

दो दिन का उपवास धारकर।
आतम लीन हुए श्री प्रभुवर॥

तीसरे दिन जब किया विहार।
भूप वीरपुर दें आहार॥

नौ वर्षों तक तप किया वन में।
एक दिन मौलि श्री तरु तल में॥

अनुभूति हुई दिव्याभास।
शुक्ल एकादशी मंगसिर मास॥

नमिनाथ हुए ज्ञान के सागर।
ज्ञानोत्सव करते सुर आकर॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

समोशरण था सभा विभूषित।
मानस्तम्भ थे चार सुशोभित॥

हुआ मौनभंग दिव्य ध्वनि से।
सब दुख दूर हुए अवनि से॥

आत्म पदार्थ से सत्ता सिद्ध।
करता तन में 'अहम्' प्रसिद्ध॥

बाह्येन्द्रियों में करण के द्वारा।
अनुभव से कर्ता स्वीकारा॥

पर-परिणति से ही यह जीव।
चतुर्गति में भ्रमे सदीव॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

रहे नरक-सागर पर्यन्त।
सहें भूख - प्यास तिर्यन्च॥

हुआ मनुज तो भी संक्लेश।
देवों में भी ईर्ष्या - द्वेष॥

नहीं सुखों का कहीं ठिकाना।
सच्चा सुख तो मोक्ष में माना॥

मोक्ष गति का द्वार है एक।
नरभव से ही पायें नेक॥

सुन कर मगन हुए सब सुरगण।
व्रत धारण करते श्रावक जन॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

हुआ विहार जहाँ भी प्रभु का।
हुआ वहीं कल्याण सभी का॥

करते रहे विहार जिनेश।
एक मास रही आयु शेष॥

शिखर सम्मेद के ऊपर जाकर।
प्रतिमा योग धरा हर्षा कर॥

शुक्ल ध्यान की अग्नि प्रजारी।
हने अघाति कर्म दुखकारी॥

अजर-अमर- शाश्वत पद पाया।
सुर-नर सबका मन हर्षाया॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

शुभ निर्वाण महोत्सव करते।
कूट मित्रधर पूजन करते॥

प्रभु हैं नीलकमल से अलंकृत।
हम हों उत्तम फल से उपकृत॥

नमिनाथ स्वामी जगवन्दन।
'अरुणा' करती प्रभु-अभिवन्दन॥

जाप:- ॐ ह्रीं अर्ह श्री नमिनाथाय नमः

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य जैन चालीसा

आदिनाथ चालीसा

अजितनाथ चालीसा

संभवनाथ चालीसा

अभिनंदननाथ चालीसा

सुमतिनाथ चालीसा

पद्मप्रभु चालीसा

सुपार्श्वनाथ चालीसा

चंद्रप्रभु चालीसा

पुष्पदंत चालीसा

शीतलनाथ चालीसा

श्रेयांसनाथ चालीसा

वासुपूज्य चालीसा

विमलनाथ चालीसा

अनंतनाथ चालीसा

धर्मनाथ चालीसा

शांतिनाथ चालीसा

कुंथुनाथ चालीसा

अरहनाथ चालीसा

मल्लिनाथ चालीसा

मुनि सुव्रतनाथ चालीसा

नमिनाथ चालीसा

नेमिनाथ चालीसा

पार्श्वनाथ चालीसा

महावीर चालीसा